Sanskrit (Honours)
B.A. (Third Part)

डॉ. [illegible]
अतिथि [illegible]
आर.टी.एस. कॉलेज
[illegible]

लघुसिद्धान्तकौमुदी
(समासः)

पूर्व में बताया गया है कि पूर्वपदप्रधान समास 'अव्ययीभाव समास' होता है अर्थात् अव्ययीभाव समास में पूर्वस्थित पद की प्रधानता होती है। सामान्यतः अव्ययीभाव समास किसी न किसी अव्यय के साथ सम्पन्न होता है। 'अव्यय' वैसे शब्दों को कहते हैं जो नियत रहते हैं अर्थात् जिनका शब्दरूप नहीं चलता। अव्ययीभाव समास में मुख्यतः 'अव्ययं विभक्तिसमीपसमृद्धि-वृद्ध्यर्थाभाव०...' इस सूत्र का प्रयोग होता है। सम्भवतः 'अव्ययों' के प्रयोग के कारण ही इस समास का नाम अव्ययीभाव समास है। पूर्व में 'अव्ययं विभक्तिसमीप०...' सूत्र से सम्पन्न होने वाले अनेक समासों को बताया जा चुका है। अब 'अति' अर्थ के प्रयोग होने वाले समास के बारे में बात करेंगे।

अतिनिद्रम् – 'अति' इस अव्यय का उपयोग

अधिकता' के अर्थ में प्रयुक्त होता है। सामान्यतः यह अधिकता किसी वस्तु की हो सकती है या किसी क्रिया की हो सकती है। 'निद्रा सम्प्रति न युज्यते' (इस समय निद्रा उपयुक्त नहीं है) इस अर्थ में 'अति' इस अव्यय का प्रयोग होता है। 'निद्रा सम्प्रति न युज्यते' इस प्रकार के लौकिक विग्रह करने पर 'निद्रा सु अति सु' इस प्रकार के अलौकिक विग्रह करने पर 'अति सु' के नित्य प्रथमा निर्दिष्ट होने के कारण 'प्रथमानिर्दिष्टं समस उपसर्जनम्' सूत्र से 'अति' भी उपसर्जन संज्ञा हो गई तथा 'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से उसका पूर्व प्रयोग हो गया। 'असम्प्रति' अर्थ में 'अव्ययं विभक्ति समीप समृद्धि०...' सूत्र से समास होने पर 'सुपो धातु प्रातिपदिकयोः' सूत्र से सुबन्त प्रत्ययों के लोप होने पर 'अतिनिद्रा' शब्द भी 'कृतद्धित समासाश्च' सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा होने तथा 'स्वौजसमौट्०...' सूत्र से 'सु' प्रत्यय होने तथा 'नाव्ययीभावादतोऽ म्त्वपञ्चम्याः' सूत्र से 'सु' के अम् होने पर 'अतिनिद्रम्' यह रूप होता है।

Rahul Ranjan

— [illegible]